उत्तर वैदिक काल
[1500-1000 BC]

- ममता रानी
अतिथि सहायक
प्राध्यापक
(इतिहास विभाग)
एस एन एस आर के
एस कॉलेज, सहरसा।

Scanned with CamScanner

ऋग्वैदिक काल [1500 - 1000 BC]

इस काल में के बारे में सभी महत्वपूर्ण जानकारी ऋग्वेद से मिलता है, इसलिए इसे ऋग्वैदिक काल कहा जाता है।
इसके अन्तर्गत निम्नलिखित बातों को शामिल किया जा सकता है —

(a) सामाजिक जीवन

(i) **वर्ण - व्यवस्था** :-
वर्ण व्यवस्था जाति के आधार पर नहीं बल्कि कर्म के आधार पर विभाजित किया गया था। कर्म के आधार पर ही कार्यों का विभाजन होता था।

(ii) **महिलाओं की स्थिति** :-
प्राचीन काल में महिलाओं की सबसे अच्छी स्थिति इसी काल में थी। इस समय पर्दा प्रथा, सतीप्रथा का प्रचलन नहीं था। महिलाएँ धार्मिक कार्य, युद्ध और मंत्रों के रचना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। महिलाएँ पिता की संपत्ति में भी पुत्र के समान अधिकार रखती थी।
- इस समय समाज पितृसत्तात्मक था।
- इस समय कुछ विदुषी महिलाओं का उल्लेख भी मिलता है, जिन लोगों ने वेद के मंत्रों की रचना किया था। जैसे - लोपामुद्रा, अपाला घोषा, सिकता आदि। इन सभी को ऋषि की उपाधि से सम्मानित किया गया था।

(iii) **विवाह पद्धति** :- इस समय बाल विवाह का प्रचलन नहीं था। एकल विवाह, बहु-विवाह विधवा विवाह और नियोग प्रथा का प्रचलन था। आजीवन अविवाहित रहने वाली लड़कियाँ अमाजू कहलाती थी।

Scanned with CamScanner

(iv) वेश - भूषा :-

इस समय सूती एवं ऊनी वस्त्रों का प्रयोग किया जाता है।

वासस - कमर के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र।

नीवि - कमर के नीचे पहना जाने वाला वस्त्र।

अधिवास - चादर या दुपट्टा।

→ आभूषण - बहुमूल्य धातु के आभूषण संपन्न लोग और कम मूल्य वाले आभूषण गरीब वर्ग के लोग धारण करते थे। जिसमे कुछ प्रसिद्ध है -

करीर - माथे पर धारण किया जाने वाला।

रुक्म - वक्ष पर धारण किया जाने वाला।

निष्क - गले में धारण किया जाने वाला।

Note:- निष्क कालांतर मे सिक्का के रूप मे लोकप्रिय हो गया।

कर्ण शोभन :- कानो मे धारण करने वाला।

(v) सामाजिक इकाई :-

इस समय संयुक्त परिवार की प्रथा थी। परिवार का सबसे अग्रज व्यक्ति मुखिया होता था जिसको कुलप कहा गया है।

जन (सबसे बड़ा)

↑ विश

ग्राम / गोत्र (सबसे छोटा)

- ऋग्वेद में जन का उल्लेख 275 बार और विश का उल्लेख 170 बार हुआ है।

Scanned with CamScanner

(vi) मनोरंजन का साधन :-

मुख्य साधन संगीत था। इसके साथ ही पाशा खेलना घुड़दौड़, रथ-दौड़ और पशु पक्षियो के लड़ाई से भी मनोरंजन किया जाता था।

(vii) खान-पान :- इस काल का मुख्य खाद्य पदार्थ जौ और गेहूँ था। लोग चावल (व्रीही) का भी प्रयोग करते थे। शाकाहार और मांसाहार दोनों प्रकार के खाद्य पदार्थ का सेवन किया जाता था।

- अतिथि को गाय का मांस खिलाया जाता था। इसलिए अतिथि को गोहंता कहा गया है।
- गाय को अघन्या कहा गया है।
- पेय-पदार्थ में सोमरस का प्रयोग किया जाता था।

राजनीतिक जीवन :-

इस काल में कबीला के रूप में राजनीतिक इकाई विभाजित था जिसका सर्वोच्च व्यक्ति राजन या गोप्ता कहलाता था। इस समय राजा का पद वंशानुगत नहीं था। राजा की सहायता देने हेतु पुरोहित, सेनानी और ग्रामीणी नामक मुख्य अधिकारी थे। इसके साथ ही स्पश (गुप्तचर), उग्र। जीवगृभ (पुलिस अधिकारी), व्राजपति (चारागाह का अधिकारी) होता था।

- भरत कुल के शासक सुदास ने रावी नदी के किनारे दसराज्ञ के युद्ध में अपने विरोधियो को पराजित किया।
- इस समय पुरु, अनु, द्रुहु, तुर्वसु, यदु पाँच जन सबसे शक्तिशाली था, जो मिलकर पंचजन कहलाते थे।

→ राजा की निरंकुशता पर अंकुश लगाने के लिए तीन प्रकार की संस्था कायम थी, जैसे :-

(i) वीदथ - यह सबसे प्राचीन संस्था थी।
(ii) सभा - यह श्रेष्ठजनों की संस्था थी। इसके अध्यक्ष को गणपति कहा गया है। इसका स्वरूप वर्तमान के राज्यसभा के समान था।
(iii) समिति - वर्तमान में लोकसभा के समान था। इसके सदस्य आम जनता के द्वारा निर्वाचित होते थे. जिसके अध्यक्ष को ईशान कहा गया है।

→ सभा और समिति राजा को गद्दी दिलाने में और उनको गद्दी से हटाने में अपनी शक्ति का प्रयोग करती थी। इस समय राजा को जनता के द्वारा स्वेच्छा से उपहार स्वरूप जो कर प्राप्त होता था उसे बलि कहा गया है।

—: धार्मिक जीवन :—

ऋग्वैदिक काल में ईश्वर की आराधना का मुख्य उद्देश्य भौतिक सुख की प्राप्ति था। इसके अन्तर्गत आरोग्य जीवन, संतान की प्राप्ति तथा तथा पशु संतति की बढ़ोतरी के लिए पूजा किया जाता था। ईश्वर की आराधना के लिए दो प्रकार का प्रचलन दिखलाई पड़ता है →

(i) स्तुति पाठ करना।
(ii) यज्ञ बलि अर्पित करना।

→ ऋग्वेद में 33 देवताओं का वर्णन किया गया है। इसके कुछ महत्वपूर्ण देवताओं का वर्णन निम्न है -

(i) इन्द्र :- यह ऋग्वैदिक काल का सबसे प्रमुख देवता थे। इन पर 250 सूक्त लिखा गया है। इनको पुरंदर (दुर्ग तोड़ने वाला) कहा गया है।

Scanned with CamScanner

यह युद्ध के देवता, वर्षा के देवता एवं विश्व के स्वामी के रूप में भी प्रचलित हैं।

(ii) अग्नि :-

इनका दूसरा स्थान था। इनपर 200 सूक्त लिखा गया है। यह मानव और ईश्वर के बीच संपर्क स्थापित कराने का कार्य करते थे।

(iii) वरुण :- इनका तीसरा स्थान था, जिस पर 30 सूक्त हैं। इनको ऋतु परिवर्तन, दिन-रात का कर्ता-धर्ता और समुद्र का देवता, सत्य का प्रतीक तथा विश्व नियामक कहा गया है।

⇒ अन्य प्रमुख देवी देवताएँ :-

⇒ देवता :-
- मरुत → आँधी तूफान के देवता।
- पूषण → पशुओं के देवता।
- अश्विन → दुःखो को हरने वाले।
- विष्णु → इनको ऋग्वेद में अउगाय (गाय से अन्न देनेवाला) कहा गया है।
- रुद्र - भगवान शिव

⇒ देवियाँ :-
- उषा :- प्रगति एवं उत्थान की देवी।
- अदिति एवं सूर्या नामक देवीयों का भी उल्लेख मिलता है।

:- आर्थिक जीवन :-

(a) कृषि :- इस समय जौ एवं गेहूँ मुख्य खाद्य फसल था। कपास के बारे में ऋग्वेद मे उल्लेख नहीं मिलता है। इस काल में भी लोहे के बारे मे जानकारी नहीं थी।

Scanned with CamScanner

(b) पशुपालन :→

कृषि के साथ-साथ इस कालमें मुख्य व्यवसाय पशुपालन था, जिसमे गाय और अश्व को प्रमुख स्थान दिया गया है। वस्तु विनिमय में अधिकांशतः गाय का उपयोग किया जाता था

- इस समय पशुपालन लोगो का मुख्य आर्थिक आधार था।

(c) वाणिज्य - व्यापार :→

इस काल में वाणिज्य-व्यापार का बहुत अधिक विकास दिखलाई नहीं पड़ता है फिर भी सूती, रेशमी और ऊनी वस्त्र और रथ बनाने का कार्य सम्पन्न होता था।

इस प्रकार ऋग्वैदिक काल का आर्थिक जीवन हड़प्पा सभ्यता के समान विकसित नही था, साथ ही यह एक ग्रामीण सभ्यता थी।

⇒ महत्वपूर्ण शब्दावली :-

लाँगल - हल
पर्जन्य - बादल
अयस - ताँबा या काँसा
बेकनाट - सूद पर पैसा लगाने वाला।

=x=

Scanned with CamScanner